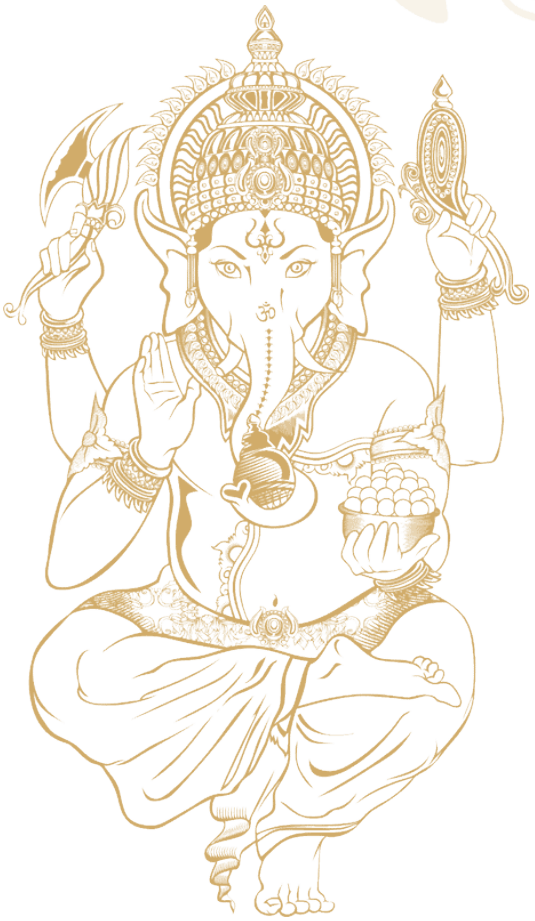

Aadhya

14 Apr 2025

08:26 AM

Ranchi

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119343101**

तिथि 14/04/2025 **समय** 08:26:00 **वार** सोमवार **स्थान** Ranchi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:37
अक्षांश 23:22:00 उत्तर **रेखांश** 85:20:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:11:20 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	22:07:30 घं
वेलान्तर	00:00:16 घं
सूर्योदय	05:29:04 घं
सूर्यास्त	18:09:12 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	वैशाख
पक्ष	कृष्ण
तिथि	2
नक्षत्र	स्वाति
योग	वज्र
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	महिष
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मृग
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	रे-रेणुका
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-रजत
होरा	गुरु
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी
राहु 10वर्ष 6मा 4दि
राहु
14/04/2025
19/10/2035

	00/00/0000
	14/04/2025
शनि	30/09/2025
बुध	18/04/2028
केतु	07/05/2029
शुक्र	06/05/2032
सूर्य	31/03/2033
चन्द्र	30/09/2034
मंगल	19/10/2035

योगिनी
पिंगला 1वर्ष 2मा 0दि
पिंगला
14/04/2025
14/06/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	14/04/2025
उल्का	25/07/2025
सिद्धा	14/12/2025
संकटा	25/05/2026
मंगला	14/06/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			19:19:30	वृष	रोहिणी	3	चंद्र	बुध	---	0:00			
सूर्य			00:12:27	मेष	अश्विनी	1	केतु	केतु	उच्च राशि	1.83	कलत्र	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			12:12:47	तुला	स्वाति	2	राहु	शनि	सम राशि	1.01	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल			04:09:04	कर्क	पुष्य	1	शनि	शनि	नीच राशि	1.01	मातृ	भ्रातृ	विपत
बुध			04:28:58	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	नीच राशि	0.88	भ्रातृ	ज्ञाति	विपत
गुरु			23:57:24	वृष	मृगशिरा	1	मंगल	मंगल	शत्रु राशि	1.59	आत्मा	धन	अतिमित्र
शुक्र			00:26:16	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	चंद्र	उच्च राशि	1.27	ज्ञाति	कलत्र	सम्पत
शनि			01:48:58	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	0.67	पुत्र	आयु	सम्पत
राहु	व		03:03:28	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि		---	ज्ञान	सम्पत
केतु	व		03:03:28	कन्या	उ०फाल्गुनी	2	सूर्य	शनि	शत्रु राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

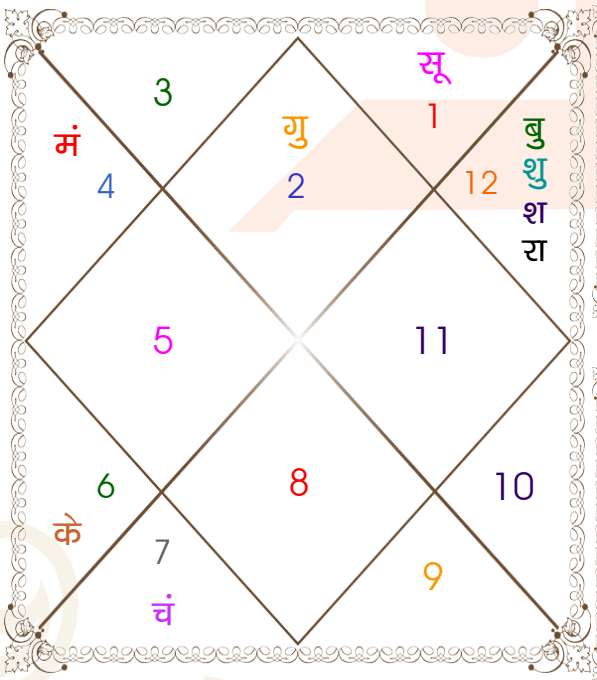

चन्द्र कुंडली

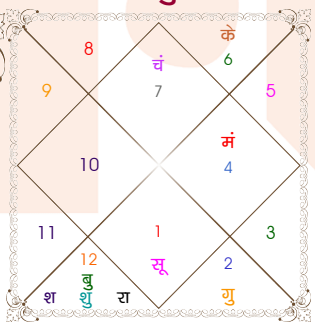

नवमांश कुंडली

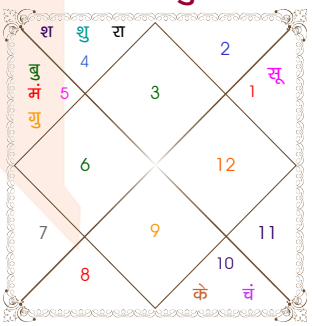

सर्वाष्टकवर्ग

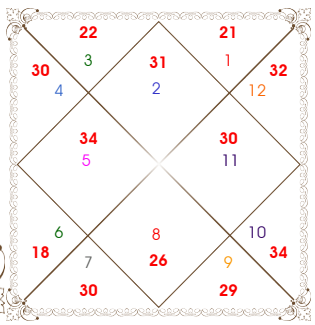

दशमांश कुंडली

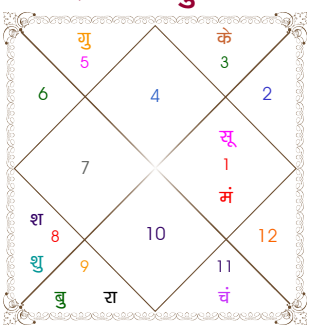

नक्षत्रफल

आप स्वाती नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि तुला तथा राशिस्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपकी नाड़ी अन्त्य, वर्ण शूद्र, वर्ग मृग, गण देव तथा योनि महिष होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारंम्भिक अक्षर "रे" होगा। यथा रेखा

आपमें नैसर्गिक रूप से सहनशीलता का गुण विद्यमान रहेगा। बड़े से बड़े कष्ट या दुःख को सहन करने की आपमें क्षमता रहेगी। व्यापार संबंधी कार्यों में आप रूचिशील रहेंगी तथा इसी कार्य को अपनी आजीविका का साधन बना सकेंगी। आपके मन में दया का भाव सर्वदा विद्यमान रहेगा तथा दीन दुःखियों के प्रति अपना त्याग का प्रदर्शन करते हुए उनकी सेवा एवं सहायता कार्यों को यत्नपूर्वक सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। आप अत्यन्त प्रिय एवं मधुर वक्ता होगी जिससे लोगों का आपके प्रति उचित मान सम्मान का भाव रहेगा। आपमें धार्मिकता की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा यत्नपूर्वक इनका पालन करेंगी।

दान्तो वणिक्कृपालु प्रियवाग्धर्माश्रितः स्वातौ।
बृहज्जातकम्

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक क्लेश सहिष्णु, व्यापारी, कृपाकारक, मधुर वाणी बोलने वाला और धर्माचरण में तत्पर होता है।

ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति आपके मन में श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहेगा। आप हमेशा इनकी प्रसन्नता के लिए कार्य करने को तत्पर रहेंगी। आप विविध प्रकार के भौतिक तथा सांसारिक सुखों का अपने जीवन में आनन्दपूर्वक उपभोग करके प्रसन्नता प्राप्त करेंगी। साथ ही धनैश्वर्य एवं वैभव से भी आप सुशोभित रहेंगी परन्तु आपकी बुद्धि मन्द होगी तथा तीव्रता की इसमें न्यूनता होगी।

स्वात्यां देवमहीसुरप्रियकरो भोगी धनी मन्द धीः।
जातकपरिजातः

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवता और ब्राह्मणों का प्रिय करने वाला, भोगी, धनी, किन्तु मन्द बुद्धि से युक्त होता है।

आपके सौन्दर्य एवं सुन्दरता से सभी लोग आकषित एवं प्रभावित रहेंगे तथा आपकी सुन्दरता की प्रशंसा करेंगे। आपका मुख तेज से स्वतः प्रकाशित रहेगा तथा समाज के अन्य पुरूषों से भी आपके मैत्रीपूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे। इनसे आपको यथोचित मान सम्मान तथा आदर प्राप्त होगा। आपका मन प्रसन्नता से युक्त रहेगा तथा अनावश्यक दुःखो का प्रदर्शन नहीं करेंगी। आपको राज्य या सरकार से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से धन प्राप्त होगा जिसका आप जीवन में उपभोग करके प्रसन्न रहेंगी।

कन्दर्परूपः प्रभयासमेतः कान्तापरप्रीति रतिप्रसन्नः।
स्वाती प्रसूतौ मनुजस्य यस्य महीपति प्राप्त विभूतियुक्तः।।
जातकाभरणम्

अर्थात स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक कामदेव के समान सुन्दर रूप वाला, अनेक स्त्रियों से प्रीति रखने वाला, प्रसन्नचित तथा राजा से धन प्राप्त करने वाला होता है।

आप की विभिन्न प्रकार के शास्त्रों के अध्ययन में रूचि रहेंगी तथा परिश्रम पूर्वक आप उनका ज्ञान प्राप्त करने में सफलता अजित करेंगी। लोग एक आदर्श विदुषी के रूप में आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी प्रकृति धर्मानुपालन में भी रत रहने की होगी तथा पुरूष वर्ग की आप अत्यन्त प्रिय रहेंगी। आपका आचरण उत्तम तथा व्यवहार विनम्रता पूर्वक रहेगा। देवताओं के प्रति भी आपके मन में पूर्ण भक्ति भाव रहेगा परन्तु आप में कंजूसी का गुण भी विद्यमान रहेगा जिसका अपने जीवन में आप समय समय पर प्रदर्शन करती रहेंगी।

विदग्धो धार्मिकश्चैव कृपणः प्रियवल्लभः।
सुशीलो देवभक्तश्च स्वातौ जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक विद्वान, धार्मिक, कृपण, अन्य स्त्रियों का प्रिय, सुशील एवं देवताओं का भक्त होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ है। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा। अपितु अधिकांश शुभ ही रहेगा। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु भी अल्प मात्रा में ही रहेंगे वे सभी आपसे पराजित तथा प्रभावित रहेंगे। कभी कभी आप स्वाभाविक रूप से क्रोध या उग्रता का भी प्रदर्शन करेंगी। आप सुन्दर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा शरीर में लावण्यता पूर्ण रूपेण विद्य मान रहेगी। जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कभी कभी आप अल्प मात्रा में शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी।

तुला राशि में जन्म होने के कारण आप शरीर तथा मुख से सुन्दर रहेंगी। आपके नेत्र विशाल होंगे तथा नाक ऊंची होगी। विविध प्रकार के वाहनों से आप जीवन में सुसम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। समाज में अन्य जनों से आपके काफी घनिष्ठ तथा मित्रता पूर्ण संबंध रहेंगे। आप वाहन तथा जमीन जायदाद से परिपूर्ण होकर इससे प्रचुर

मात्रा में धनार्जन करेंगी। आप एक प्रतापी तथा पराक्रमी महिला होंगी तथा समाज में अपना पूर्ण प्रभुत्व स्थापित करने में समर्थ रहेंगी। सभी लोग आपको हार्दिक मान सम्मान प्रदान करेंगे। वैभव एवं धनैश्वर्य का आपके पास कभी भी अभाव नहीं रहेगा। आप सुखपूर्वक जीवन में उनका उपभोग करेंगी। पति को आप पूर्ण रूप से वश में रखेंगी तथा वे घर के सारे कार्य आपकी आज्ञा तथा निर्देश से ही सम्पन्न करेंगे। कार्य करने में आप हमेशा सक्रियता का भाव रखेंगी। धनधान्य संग्रह करने की प्रवृति से भी आप युक्त रहेंगी तथा बन्धुवर्ग के हित कार्यों में तत्पर रहेंगी।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप समाज में सज्जन पुरूषो की सेवा तथा सहायता कार्य करने में हमेशा तत्पर रहेंगी एवं एक श्रेष्ठ विदुषी के रूप में भी ख्याति अजित करेंगी तथा शुद्धतापूर्ण ढंग से आप अपने जीवन को व्यतीत करेंगी। आपका शरीर सुगन्धि से परिपूर्ण रहेगा तथा भ्रमण के प्रति आप विशेष रूप से रूचिशील रहेंगी। आपका अधिकांश समय भ्रमण तथा यात्राओं में ही व्यतीत होगा। वस्तुओं के क्रय तथा विक्रय में आप अत्यन्त ही निपुण रहेंगी। आप शारीरिक रूग्णता से यदा कदा कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी। आप हमेशा बन्धु वर्ग का उपकार करेंगी तथा बाद में उन्ही लोगों से उपेक्षित भी होंगी।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

धैर्य से आप युक्त रहेंगी तथा जीवन के अधिकांश सांसारिक कार्य कलापों को धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगी। न्याय में आपकी पूर्ण आस्था रहेंगी। न्याय के प्रति आपकी निष्पक्षता तथा ईमानदारी को मध्यनजर रखते हुए अन्य सामाजिक जन अपने विवादों का समाधान करने के लिए आपको मध्यस्थ या पंच बनाएंगे। आप उसे सहर्ष स्वीकार करेंगी तथा ईमानदारी से अपना कर्तव्य पूर्ण करेंगी। इससे लोगों के मन में आपके प्रति अधिक सम्मान की भावना उत्पन्न होगी। आपका भाग्योदय विलम्ब से होगा तथा पुत्र संतति अल्प मात्रा में ही रहेगी।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आपका शारीरिक कद न तो लम्बा होगा न छोटा अपितु मध्यम रहेगा। आप

सरकार के उच्चाधिकारियों तथा पदाधिकारियों को प्रसन्न करने की कला में निपुण रहेंगी तथा उनसे पूर्ण सहयोग एवं सम्मान प्राप्त करेंगी। आप अपने सम्बन्धियों तथा बन्धु वर्ग को हमेशा कुछ न कुछ अवश्य देती रहेंगी। कभी कभी आप अनावश्यक तथा अधिक मात्रा में भी बोलने वाली होंगी अतः इससे अन्य लोगों पर आपके प्रभाव में न्यूनता आऐगी। ज्योतिष शास्त्र अथवा सूर्यादि ग्रह नक्षत्रों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा। इसके साथ ही बन्धु तथा सेवकों के प्रति आपके मन में अतिशय अनुराग की भावना विद्यमान रहेंगी।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

जीवन में आप यदा कदा गलत स्थान पर अपना रोष प्रकट करेंगे जिससे आपको बाद में अत्यन्त ही दुःख अथवा कष्ट की अनुभूति होगी। आप अपने सम्भाषण में प्रिय वाणी का उपयोग करेंगी जो श्रोता को अच्छी लगेगी। आप दया एवं करूणा के भाव से भी परिपूर्ण रहेंगी तथा समय समय पर अपनी इस प्रवृति का समाज में प्रदर्शन करती रहेंगी। आपकी आखों में समान्यतया चंचलता दृष्टिगोचर होती रहेगी। आप घर के अन्दर बलवान तथा बाहर कमजोरी का अनुभव करेंगी। व्यापारिक कार्यों में आप हमेशा सफलता प्राप्त करेंगी। मित्र तथा बन्धु वर्ग की आप प्रिय रहेंगी तथा घर से बाहर विदेश में भी निवास करेंगी।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येळति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप जीवन में प्रचुर मात्रा में वाहनादि से सर्वथा बल तथा धन को प्राप्त करेंगी। आपका हृदय दानशील रहेगा तथा समय समय पर दीन दुःखियों को आप यथाशक्ति दान देती रहेंगी। अन्य जनों से आप मित्रता पूर्ण संबंध रख कर उनकी प्रिय होंगी।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

देवगण में उत्पन्न होने के कारण आप मधुर एवं प्रिय वाणी को बोलने वाली होंगी। आपकी बुद्धि सादगी तथा निर्मलता से युक्त रहेगी आप सुगमता से अपने विचार अन्यों के समक्ष प्रकट करेंगी तथा सुगमता पूर्वक उनके विचारों को भी ग्रहण करेंगी। आप को थोड़ी मात्रा में शुद्ध भोजन करना आनन्ददायक प्रतीत होगा। आप गुणों से सुशोभित रहेंगी। साथ ही नाना प्रकार के धनैश्वर्य तथा वैभव आदि से युक्त रहेंगी तथा सुखपूर्वक जीवन में उसका उपभोग

करेंगी।

शारीरिक सुन्दरता आपकी दर्शनीय होगी तथा इससे सभी लोग आपसे आकर्षित रहेंगे। आपके मन में दानशीलता की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा बुद्धिमता का अभाव नहीं रहेगा। आप अत्यन्त सादगी पूर्ण ढंग से रहेंगी तथा दिखावे से दूर ही रहेंगी ।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

महिष योनि में जन्म लेने के कारण आप लड़ाई झगड़ों तथा विवादों में अधिकांश रूप से विजय प्राप्त करेंगी। आप स्वयं भी साहसिक कार्यों को सम्पन्न करने की इच्छुक एवं साहसी महिला होगी तथा अपने अधिकांश कार्यों को साहस से ही सम्पन्न करेंगी। साथ ही आपकी संततियां भी अधिक मात्रा में उत्पन्न होगी। आप का शरीर वायु प्रकृति प्रधान रहेगा तथा वात संबंधी रोगों से आप यदा कदा पीड़ित भी रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपकी बुद्धि में तीक्ष्णता का अभाव रहेगा तथा मध्यम बुद्धि ही रहेगी।

संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु बहुप्रजः।
वाताधिको मन्दमतिर्नरो महिषयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् महिष योनि में उत्पन्न जातक युद्ध के मैदान में विजय प्राप्त करने वाला, योद्धा, कामाग्नि से प्रबल, अधिक संतति वाला, वायु प्रधान प्रवृति तथा धर्म के प्रति निष्ठावान रहता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही उनको जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही उनकी प्रवृति पुण्य एवं दान संबंधी कार्यों को करने की रहेगी अतः आपको भी वे पुण्य कार्यों की ओर प्रेरित करेंगे। साथ ही धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण आदर की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव उत्पन्न होगा परन्तु कुछ समय के बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। जीवन में आप उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगी एवं समयानुसार उनको पूर्ण सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कोई कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म के समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा शक्त, साहस एवं पराक्रम का भाव उनमें विद्यमान रहेगा। साथ ही यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में समस्त शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख के समय में भी आप उनसे पूर्ण सहायता प्राप्त करेंगी।

आप भी उनके प्रति हमेशा स्नेह का भाव रखेंगी एवं उनकी अवसरानुकूल सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें तनिक कटुता या तनाव भी आयेगा लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वयं ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप उनके सुख दुःख की सहयोगी रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग देती रहेंगी।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, शतभिषा नक्षत्र, शुक्लयोग, तैतिलकरण, गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा सर्वथा अनिष्ट फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शतमिषा नक्षत्र, शुक्लयोग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य का भी पूर्ण ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक परेशानियां, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि या अन्य कार्यों में सफलता नहीं मिल रही हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए तथा शुक्रवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही हीरा, सोना, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, चावल तथा दूध इत्यादि पदार्थो को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए इससे आप को मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा शुभ फलों के प्रभावों में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के 20000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके लाभमार्ग सर्वत्र प्रशस्त होंगे तथा अशुभ फलों

में भी न्यूनता होगी।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।